पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रणीत एकात्म मानववाद

ज्योति गुप्ता
शोधार्थी, शिक्षा संकाय
ख्वाज़ा मोइनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय, लखनऊ

डॉ0 चंदना डे
प्रोफेसर एवं संकायाध्यक्ष, शिक्षा संकाय
ख्वाज़ा मोइनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय, लखनऊ

सारॉंशः

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का सम्पूर्ण जीवन त्याग, समर्पण व संघर्ष की एक मिसाल रहा है। वे एक कुशल संगठनकर्ता, राजनेता और समाजसेवी के साथ साथ एक महान लेखक और दर्शनशास्त्री भी थे। श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय के लिए कहा था, ''राजनीति उनके लिए साधन थी, साध्य नहीं। वह मार्ग था, मंजिल नहीं। वे राजनीति का आध्यात्मीकरण करना चाहते थे। वे भारत के उज्जवल अतीत से प्रेरणा लेते थे तथा उज्जवलतर भविष्य का निर्माण करना चाहते थे। उनकी आस्थाएँ सदियों पुराने अक्षय राष्ट्रजीवन की जड़ों से रस ग्रहण करती थी, किंतु वे रूढ़िवादी नही थे। भविष्य के निर्माण के लिए वे भारत को समृद्धशील आधुनिक राष्ट्र बनाना चाहते थे। उपाध्याय जी का कार्य व्यक्तिनिष्ठ नही, तत्त्वनिष्ठ था। उन्होंने सदैव आदर्शों पर बल दिया और सिद्धान्तों पर जीना सिखाया।''

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी एक ऐसा नाम है, जिसे सुनते ही लोगो के दृष्टिपटल पर एक शब्द आता है–एकात्म मानववाद। पं0 उपाध्याय प्राचीन भारतीय दर्शन को स्पष्ट करते हुए समाज को सबके कल्याण पर आधारित जीवन जीने की नई राह दिखाई और नई विचारधारा की नींव रखी, जिसे एकात्म मानववाद के नाम से जाना जाता है। एकात्म मानववाद में आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक एवं राजकीस सिद्धान्तों का समावेश है जिसमें सम्पूर्ण सृष्टि को एकसूत्र में बांधकर उसके कल्याण हेतु विचार प्रस्तुत किया गया है। जीवन और प्रकृति के समस्त भागो को अपने में समाहित करने वाली विचारधारा, जो कालखण्ड की सभी समस्याओं के व्यावहारिक समाधान हेतु प्रासंगिक सिद्ध हुई है। इसमें सम्पूर्ण सृष्टि के कल्याण का विचार समाहित है। एकात्म मानववाद एक ऐसी विचारधारा है, जिसमें जीवन का समग्रता से चिंतन किया गया है।

मुख्य शब्दः

पंडित दीनदयाल उपाध्याय, एकात्म मानववाद, अंतनिर्हित परस्पर पूरक सम्बंध, भारतीय संस्कृति

प्रस्तवनाः

भारतवर्ष 'वसुधैव कुटुम्बकम्' एवं 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की परम्परा और अपनी महान सभ्यता एवं संस्कृति के कारण विश्व में सदैव प्रसिद्ध रहा है। समय–समय पा अनेक महापुरूषों ने भारम भूमि पर अवतरित होकर भारत की पराम्परा को सशक्त बनाया है और मानव जीवन को अंधकार के गर्त से निकाल कर मानव को विकास की राह दिखाई है। आधुनिक भारत में एक ऐसी ही विभूति का अवतरण हुआ जो पंडित दीनदयाल उपाध्याय के नाम जाने जाते है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का जन्म उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले के नगला चन्द्रीभान ग्राम में 25 सितम्बर 1916 को एक सामान्य ब्राह्मण में हुआ था। उनके पिता का नाम भगवती प्रसाद उपाध्याय था, जो नगला चंद्रभान (फरह, मथुरा) के निवासी थे। उनकी माता का नाम रामप्यारी था, जो धार्मिक प्रवृत्ति की थीं। पिता रेलवे में जलेसर रोड स्टेशन के सहायक स्टेशन मास्टर थे। रेल की नौकरी होने के कारण उनके पिता का अधिक समय बाहर ही बीतता था। कभी-कभी छुट्टी मिलने पर ही घर आते थे। दो वर्ष बाद दीनदयाल के भाई ने जन्म लिया, जिसका नाम शिवदयाल रखा गया। पिता भगवती प्रसाद ने बच्चों को ननिहाल भेज दिया। उस समय

उपाध्याय जी के नाना चुन्नीलाल शुक्ल धानक्या (जयपुर, राज०) में स्टेशन मास्टर थे। नाना का परिवार बहुत बड़ा था। दीनदयाल अपने ममेरे भाइयों के साथ बड़े हुए। नाना का गाँव आगरा जिले में फतेहपुर सीकरी के पास 'गुड़ की मँढई' था। दीनदयाल अभी 3 वर्ष के भी नहीं हुये थे, कि उनके पिता का देहांत हो गया। पति की मृत्यु से माँ रामप्यारी को अपना जीवन अंधकारमय लगने लगा। वे अत्यधिक बीमार रहने लगीं। उन्हें क्षय रोग लग गया। 8 अगस्त 1924 को उनका भी देहावसान हो गया। उस समय दीनदयाल 7 वर्ष के थे। 1926 में नाना चुन्नीलाल भी नहीं रहे। 1931 में पालन करने वाली मामी का निधन हो गया। 18 नवम्बर 1934 को अनुज शिवदयाल ने भी उपाध्याय जी का साथ सदा के लिए छोड़कर दुनिया से विदा ले ली। 1935 में स्नेहमयी नानी भी स्वर्ग सिधार गयीं। 19 वर्ष की अवस्था तक उपाध्याय जी ने मृत्यु-दर्शन से गहन साक्षात्कार कर लिया था। 8वीं की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उपाध्याय जी ने कल्याण हाईस्कूल, सीकर, राजस्थान से दसवीं की परीक्षा में बोर्ड में प्रथम स्थान प्राप्त किया। 1937 में पिलानी से इंटरमीडिएट की परीक्षा में पुनः बोर्ड में प्रथम स्थान प्राप्त किया। 1939 में कानपुर के सनातन धर्म कालेज से बी०ए० की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। अंगरेजी से एम०ए० करने के लिए सेंट जॉन्स कालेज, आगरा में प्रवेश लिया और पूर्वार्द्ध में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुये। बीमार बहन रामादेवी की शुश्रूषा में लगे रहने के कारण उत्तरार्द्ध न कर सके। बहन की मृत्यु ने उन्हें झकझोर कर रख दिया। मामाजी के बहुत आग्रह पर उन्होंने प्रशासनिक परीक्षा दी, उत्तीर्ण भी हुये किन्तु अंगरेज सरकार की नौकरी नहीं की। 1941 में प्रयाग से बी०टी० की परीक्षा उत्तीर्ण की। बी०ए० और बी०टी० करने के बाद भी उन्होंने नौकरी नहीं की। 1937 में जब वह कानपुर से बी०ए० कर थे, अपने सहपाठी बालूजी महाशब्दे की प्रेरणा से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्पर्क में आये। संघ के संस्थापक डॉ० हेडगेवार का सान्निध्य कानपुर में ही मिला। उपाध्याय जी ने पढ़ाई पूरी होने के बाद संघ का दो वर्षों का प्रशिक्षण पूर्ण किया और संघ के जीवनव्रती प्रचारक हो गये। आजीवन संघ के प्रचारक रहे। संघ के माध्यम से ही उपाध्याय जी राजनीति में आये। 21 अक्टूबर 1951 को डॉ० श्यामाप्रसाद मुखर्जी की अध्यक्षता में 'भारतीय जनसंघ' की स्थापना हुई। गुरुजी (गोलवलकर जी) की प्रेरणा इसमें निहित थी। 1952 में इसका प्रथम अधिवेशन कानपुर में हुआ। उपाध्याय जी इस दल के महामंत्री बने। इस अधिवेशन में पारित 15 प्रस्तावों में से 7 उपाध्याय जी ने प्रस्तुत किये। डॉ० मुखर्जी ने उनकी कार्यकुशलता और क्षमता से प्रभावित होकर कहा- "यदि मुझे दो दीनदयाल मिल जाएं, तो मैं भारतीय राजनीति का नक्शा बदल दूँ।" 1967 तक उपाध्याय जी भारतीय जनसंघ के महामंत्री रहे। 1967 में कालीकट अधिवेशन में उपाध्याय जी भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। वह मात्र 43 दिन जनसंघ के अध्यक्ष रहे। 10/11 फरवरी 1968 की रात्रि में मुगलसराय स्टेशन पर उनकी हत्या कर दी गई।

एकात्म मानवादः

पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारतीय धर्म एवं संस्कृति में अटूट आस्था रखते थे इसकी झलक उनके एकात्म मानववाद के विचार में पूर्णतः परिलक्षित होती है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का मानना था कि भारतीय परम्परा मानव को एकात्म मानती है यानि जिसको बॉटा नही जा सकता। समाज और व्यक्ति इस प्रकार जुड़े है उन्हें अलग अलग नही किसा जा सकता। भारतीय संस्कृति की मूल विशेषता ही है कि वह जीवन को एकीकृत रूप में देखती है। उनका यही विचार मानववाद का आधार हैं। एकात्म मानववाद के मूल में व्यक्ति हैं। इस विचारधारा में व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज, समाज से राष्ट्र, राष्ट्र से समष्टि या विश्व एवं इसके पश्चात् सम्पूर्ण चराचर सृष्टि पर विचार किया गया है। एकात्म मानववाद ब्रह्मंड की समस्त इकाइयों में अंतनिर्हित परस्पर पूरक सम्बंधों को स्पष्ट करता है। पंडित जी मानव, समाज एवं प्रकृति व उनके सम्बंधो को समग्रता से देखते है। उनके अनुसार– 'मनुष्य मन, बुद्धि, आत्मा व शरीर का समुच्चय है। हम उसको टुकड़ो में बॉटकर विचार नही कर सकते है। मानव की यही समग्रता या पुर्णता उसे समाज के लिए उपयुक्त बनाती है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा 22 से 25 अप्रैल 1965 को मुम्बई में एक सभा (विजयवाड़ा अधिवेशन) में दिए गए चार व्याख्यानों के रूप में प्रस्तुत किया गया था। एकात्म मानवाद राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का

पथप्रदर्शक विचारधारा है। पंडित दीनदयाल जी व्यक्तिवाद, लोकतंत्र, समाजवाद, साम्यवाद और पूंजीवाद को पश्चिमी अवधारणा मानते थे। वह इनको भौतिक विचारधाराओं का स्वरूप मानते थे। पंडित दीनदयाल जी ने एकात्म मानवाद को सम्पूर्ण सृष्टि का एक मात्र दर्शन बताते हुए मानवशांति, राजनीतिज्ञ, सामाजिक और अर्थनीति के जिन सिद्धान्तों को जनता के सामने रखा वह अतुलनीय व अद्भुत है। एकात्म मानववाद एक ऐसी धारणा है जो सर्पिलाकार मण्डलाकृति द्वारा स्पष्ट की जा सकती है जिसके केंद्र में व्यक्ति, व्यक्ति से जुड़ा हुआ एक घेरा परिवार, परिवार से जुड़ा हुआ एक घेरा समाज, जाति, फिर राष्ट्र, विश्व और फिर अनंत ब्रम्हांड को अपने में समाविष्ट किये है। इस अखण्डमण्डलाकार आकृति में एक घातक में से दूसरे फिर दूसरे से तीसरे का विकास होता जाता है। सभी एक.दूसरे से जुड़कर अपना अस्तित्व साधते हुए एक दुसरे के पूरक एवं स्वाभाविक सहयोगी है। इनमे कोई संघर्ष नहीं है। एकात्म मानवाद को निम्न अवयवों की सहायता से सरलता से समझा जा सकता है–

- **विकास के केंद्र में मानव**: इस दर्शन के अनुसार भारत के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण था कि वह एक ऐसे स्वदेशी आर्थिक ढाँचे का विकास करे जिसके केंद्र में मानव को रखा गया हो। इसने पाश्चात्य दर्शन को पूर्णतः अस्वीकृत नहीं किया, बल्कि यह समाजवाद तथा पूँजीवाद को क्रमशः उनके गुणों के आधार पर मूल्यांकन करता है। साथ ही यह उनकी अतिवादिता तथा अलगाव की आलोचना भी करता है।
- **व्यक्तिवाद का खंडन**: यह व्यक्ति तथा समाज के मध्य एक सावयव संबंध की आवश्यकता पर बल देता है। सामान्य लक्ष्यों तथा व्यक्ति विशेष के लक्ष्यों के बीच एक समन्वय होना चाहिए। जहाँ व्यक्ति विशेष के लक्ष्य का व्यापक सामाजिक लक्ष्यों के लिए त्याग भी किया जा सकता है। यह एक पूर्ण समाज के निर्माण हेतु परिवार तथा मानवता के महत्व को प्रोत्साहित करता है।
- **सांस्कृतिक चरित्र**: यह स्वदेशी संस्कृति को राष्ट्र की सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक संरचना के साथ एकीकृत करने का समर्थन करता है। इसके अनुसारए भारत द्वारा अपनाए जाने वाले किसी भी राजनीतिक दर्शन या विकास के किसी मॉडल की पृष्ठभूमि का निर्माण भारतीय संस्कृति की मूलवस्तु तथा इसकी अद्वितीयता द्वारा किया जाना चाहिए।
- **समेकित दृष्टिकोण**: इसमें मतभिन्नताओं को स्वीकार करते समयए जीवन के विभिन्न पहलुओं में अलगावए अस्वीकृति तथा असहमति की अपेक्षा अंतर.निर्भरताए साहचर्य तथा एकत्व पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। इसलिए यह सभी के कल्याण हेतु कार्य करता है।
- **धर्म राज्य**: यह एक आदर्श कर्त्तव्यपारायण राज्य को निरूपित करता है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को कुछ अधिकार प्रदान करने के साथ.साथ उसके राज्य के प्रति कुछ दायित्व भी निर्धारित किये जाते हैं।
- **अंत्योदय**: इस अवधारणा में यह सुनिश्चित किया जाता है कि निर्णय इस प्रकार लिये जाएँ कि पंक्ति में खड़े अंतिम व्यक्ति को भी उसका लाभ प्राप्त हो सके।

एकात्म मानववाद की वर्तमान प्रासंगिकता.

- आज विश्व की एक बड़ी आबादी गरीबी में जीवन यापन कर रही है। विश्वभर में विकास के कई मॉडल लाए गए लेकिन आशानुरूप परिणाम नहीं मिला। अतः दुनिया को एक ऐसे विकास मॉडल की तलाश है जो एकीकृत और संधारणीय हो। एकात्म मानववाद ऐसा ही एक दर्शन है जो अपनी प्रकृति में एकीकृत एवं संधारणीय (Integral and sustainable) है।
- एकात्म मानववाद का उद्देश्य व्यक्ति एवं समाज की आवश्यकता को संतुलित करते हुए प्रत्येक मानव को गरिमापूर्ण जीवन सुनिश्चित करना है। यह प्राकृतिक संसाधनों के संधारणीय उपभोग का समर्थन करता है जिससे कि उन संसाधनों की पुनः पूर्ति की जा सके।

- एकात्म मानववाद न केवल राजनीतिक बल्कि आर्थिक एवं सामाजिक लोकतंत्र एवं स्वतंत्रता को भी बढ़ाता है। यह सिद्धांत विविधता को प्रोत्साहन देता है अतः भारत जैससे विविधतापूर्ण देश के लिए यह सर्वाधिक उपयुक्त है।
- एकात्म मानववाद का उद्देश्य प्रत्येक मानव को गरिमापूर्ण जीवन प्रदान करना है एवं अंत्योदय अर्थात समाज के निचले स्तर पर स्थित व्यक्ति के जीवन में सुधार करना है। इस प्रकारए यह दर्शन भारत जैसे कल्याणकारी राज्य में सदैव प्रासंगिक रहेगा।

निष्कर्ष:

पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक दार्शनिक, समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री एवं राजनीतिज्ञ थे। इनके द्वारा प्रस्तुत दर्शन को एकात्म मानववाद (Integral humanism) कहा जाता है जिसका उद्देश्य एक ऐसा स्वदेशी सामाजिक.आर्थिक मॉडल प्रस्तुत करना था जिसमें विकास के केंद्र में मानव हो। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने पश्चिमी पूंजीवादी व्यक्तिवाद एवं मार्क्सवादी समाजवाद दोनों का विरोध किया, लेकिन आधुनिक तकनीक एवं पश्चिमी विज्ञान का स्वागत किया। ये पूंजीवाद एवं समाजवाद के मध्य एक ऐसी राह के पक्षधर थे जिसमें दोनों प्रणालियों के गुण तो मौजूद हों लेकिन उनके अतिरेक एवं अलगाव जैसे अवगुण न हो। उपाध्याय के अनुसार पूंजीवादी एवं समाजवादी विचारधाराएँ केवल मानव के शरीर एवं मन की आवश्यकताओं पर विचार करती है इसलिए वे भौतिकवादी उद्देश्य पर आधारित हैं जबकि मानव के संपूर्ण विकास के लिए इनके साथ.साथ आत्मिक विकास भी आवश्यक है। साथ ही, उन्होंने एक वर्गहीन, जातिहीन और संघर्ष मुक्त सामाजिक व्यवस्था की कल्पना की थी।

सन्दर्भ:

- सिंह, डी0 (2018): पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रणीत एकात्म मानववादः एक परिचय, शोध मंथन https://doi.org/10.31995/shodhmanthan
- शर्मा चंद्र महेश.(2014): एकात्म मानववाद, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली. www.books.google.co.in>books
- झा, बी. के. (2018): एकात्म मानवदर्शन तथा अन्त्योदय. पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों का राष्ट्रीय, आर्थिक एवं सामाजिक विकास में योगदान. 1(1), 14–17 www.conference.nrjp.co.in>issue>view
- मल्होत्रा श्वेता (2018): पंडित दीनदयाल उपाध्याय के उपेक्षित एकात्म मानवदर्शन की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सार्थकता. पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों का राष्ट्रीय, आर्थिक एवं सामाजिक विकास में योगदान. 1(1), 42–46. www.conference.nrjp.co.in>issue>view
- पाण्डेय, ए. के. (2018): एकात्म मानवदर्शन के प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय. पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों का राष्ट्रीय, आर्थिक एवं सामाजिक विकास में योगदान. 1(1), 82–83. www.conference.nrjp.co.in>issue>view
- सिंह, टी. (2018): एकात्म मानवदर्शन के प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय. पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों का राष्ट्रीय, आर्थिक एवं सामाजिक विकास में योगदान. 1(1), 92–94.